लगे। सबसे पहले आपने अपने जवान बेटे अली अकबर[अ०] को जो पैग़म्बर[स०] की छवि थे मरने के लिए भेजा। माँ ख़ैमे मे थी और बाप ख़ेमे के दरवाज़े पर उनका चाँद शत्रु की सेना की घटा में छिपा हुआ था। बाप ने देखा और माँ ने सुन लिया कि अली अकबर तलवारों से टुकड़े टुकड़े हो गये, परन्तु धैर्य एवं शान्ति में बदलाव नहीं आया। इसके बाद दूसरे सम्बन्धी भी एक-एक करके विदा हुए और सत्य मार्ग पर न्यौछावर हो गये। सबसे अन्त में आपके जाँबाज़ भाई अब्बास बिन अली[अ०] आप से विदा हुए। ये हुसैनी गुट के (अलम्बरदार) अगुवा थे, जिनके क़त्ल होने से हुसैन[अ०] की कमर टूट गई परन्तु हिम्मत नहीं टूटी। इसके बाद आपके पास कोई चीज़ सत्य के मार्ग में न्यौछावर करने के लिए न बचा। मगर सबके आख़िर में आपने एक ऐसा मासूम (निष्पाप) दक्षिणा पेश कर दिया जिस पर किसी धर्म और क़ानून से मुजरिम होने का इल्ज़ाम न आ सकता था।

वह दूधमुँहा बच्चा जो अपनी माँ की गोद में प्यास से सिसकियाँ ले रहा था, हुसैन[अ०] ने उसकी हालत देखी और शत्रु की सेना के सामने अपने हाथों पर लाये, यह था हुसैन[अ०] की अन्तिम दक्षिणा (फ़िद्या), मानवता के हाथ पैर थर्थराने लगे और रहम व करम की दुनिया में अंधेरा छा गया, जब शत्रु सेना के एक सिपाही ने तीर को धनुष में जोड़ा और बच्चे की गर्दन का निशाना बना लिया। हुसैन[अ०] का ये अन्तिम उपहार भी कुबूल हो गया।

अब क्या था! स्वयं हुसैन[अ०] को सत्य के समर्थन में जिहाद का कर्तव्य पूरा करना था और अपनी जान का बलिदान देना था। अतः आपने इस लाचारी की हालत में तलवार म्यान से निकाली, और जितनी इन्सानी हैसियत से अल्लाह ने शक्ति दी थी उस हद तक बड़ा कड़ा मुकाबला किया। वह मुकाबला जो ऐसे हालात में आम आदमी की शक्ति से ऊपर था, परन्तु कहाँ एक आदमी का शरीर और कहाँ फ़ौलादी तलवारों का जमघट, शरीर घाँवों से भर गया। आप घोड़े से ज़मीन पर गिरे और वह उद्देश्य जो आपके के लिए पहले से ही आसान था, अब अधिक आसान हो गया, आपका सर काट कर नैज़े (भाल) पर उठाया गया, शहीदों की लाशें घोड़ों से रौंदी गईं। माल व समान लूटा गया। रसूल[स०] के परिवार की पवित्र औरतों के सर से चादरें उतारी गईं, ख़ैमों मे आग लगाई गई, मर्दों एक बीमार व नाचार अली इब्नुल हुसैन[अ०] बाक़ी थे जिन्हें हथकड़ियाँ व बेड़ियाँ पहनाया गया। अरब की शरीफ़ परिवार की इज़्ज़तदार औरतें असीर (क़ैद) करके एक शहर से दूसरे शहर घुमाई गईं।

अज़ादारी-ए-शब्बीर

मोहतरमा कनीज़ अकबरपुरी

ईमाँ की है पहचान अज़ादारी-ए-शब्बीर
है ख़ल्क़ पे एहसान अज़ादारी-ए-शब्बीर

लम्हों में बना देती है बेहोश को बाहोश
रखती है बहुत जान अज़ादारी-ए-शब्बीर

देती है अज़ादार को ये दौलते कौनैन
क्या ख़ूब है सामान अज़ादारी-ए-शब्बीर

मैं ज़िन्दा हूँ इसके लिए, मैं ज़िन्दा हूँ इससे
है ज़ीस्त का सामान अज़ादारी-ए-शब्बीर

खुद मिट गये आदा-ए-अज़ा, बाक़ी अज़ा है
मिट सकती है नादान अज़ादारी-ए-शब्बीर

शब्बीर से तूफ़ाने सितम हार गया है
है फ़तह का ऐलान अज़ादारी-ए-शब्बीर

खुशबख़्त कनीज़ हूँ कि मेरे ख़ान-ए-दिल में
बचपन से है मेहमान अज़ादारी-ए-शब्बीर